Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January-2025 | Page 33-38

प्रभा खेतान के उपन्यासों में युगीन परिवेश

डॉ. कविता वैष्णव
सहायक प्राध्यापक
महर्षि वेदव्यास शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भखारा, जिला-धमतरी (छ.ग.)

सार-संक्षेप:

प्रभा खेतान के उपन्यासों में युगीन परिवेश की सूक्ष्म और यथार्थवादी चित्रण दिखाई देता है, जिसमें उन्होंने समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, संस्कृति और मानव मूल्य जैसे विविध पहलुओं को अभिव्यक्त किया है। उनके उपन्यास महानगरीय सभ्यता के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों, सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक घटनाओं और आर्थिक समस्याओं का गंभीरता से विश्लेषण करते हैं। प्रभा जी शहरी और ग्रामीण परिवेश दोनों का सजीव चित्रण करती हैं, जिसमें परिवार, परंपरा, रीति-रिवाज, वेशभूषा, संस्कृति, शिक्षा और समाज के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित किया गया है। प्रभा खेतान ने भारतीय और पाश्चात्य समाजों के संघर्षों को उजागर करते हुए स्त्री के संघर्षों, पारिवारिक विघटन और वैश्विक समस्याओं के बीच उसकी अस्मिता के सवालों को प्रमुखता से उठाया है। उनके उपन्यासों में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों के बीच भेद, धर्म के प्रति आस्था और आर्थिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से चित्रित हैं। 'पीली आंधी', 'आओ पेपे घर चलें', 'अग्निसंभवा' और 'एड्स' जैसे उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेशों का तुलनात्मक चित्रण किया गया है। प्रभा खेतान ने समाज के बदलते मूल्यों और समस्याओं के साथ-साथ स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता, पारिवारिक विघटन और आधुनिकता के दबावों का चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में राजनीतिक परिवेश की प्रामाणिकता, धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक मतभेदों का विवेचन परिवर्तनशील समाज को समझने में सहायक है।

मूल शब्द: उपन्यास, स्त्री, अस्मिता, संस्कृति।

शोध-पत्र:

प्रभा खेतान के उपन्यासों में युगीन परिवेश की प्रतिबद्धता संपूर्ण संवेदना एवं यथार्थबोध के साथ अभिव्यक्त हुई है। उनके उपन्यासों में महानगरीय सभ्यता के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के साथ-साथ युगीन घटनाओं तथा आधुनिकता बोध की विडंबनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। भौतिकतावादी संस्कृति में मानव मूल्यों का ह्रास, यांत्रिक जीवन शैली, पलायनवाद, संवेदनाहीनता, आत्मनिर्वासन, पारिवारिक विघटन, अर्थ की

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January-2025 | Page 33-38

सर्वोच्चता, अलगाव, अनास्था, अजनबीपन, ऊब, घुटन, संत्रास और रिक्तताबोध आदि विसंगतियाँ सामाजिक मान्यताओं तथा आत्मीय संबंधों को शिथिल करती जा रही हैं। शासन तंत्र का विश्वासघात तथा राजनीतिक कटुता अविश्वसनीयता को बढ़ावा दे रहे हैं। उनके उपन्यासों में इन परिवेशगत घटनाओं और परिस्थितियों के बीच पात्रों के संघर्ष का ताना-बाना बुना गया है। उनका लेखन शहरी और ग्रामीण दोनों परिवेशों को चित्रित करता है। 'पीली आँधी' उपन्यास में ग्रामीण जीवन का संघर्ष, 'आओ पेपे घर चलें', 'अग्निसंभवा' और 'एड्स' जैसे उपन्यासों में विदेशी और महानगरीय परिवेश की झलक मिलती है।

सामाजिक परिवेश प्रभा जी के उपन्यास साहित्य का प्रमुख नियामक तत्व रहा है। देशी-विदेशी पृष्ठभूमि पर रचे गए कथानकों से वैश्विक स्तर पर सामाजिक संरचना के रहस्य उद्घाटित होते हैं। प्रभा खेतान के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश इतना अधिक विस्तृत और अंतर्समाहित है कि उसमें परिवार, परंपरा, रीति-रिवाज, वेशभूषा, भाषा, संस्कृति, शिक्षा आदि सबकुछ सम्मिलित है, समाज से इतर कुछ भी नहीं है। 'आओ पेपे घर चलें' में अमेरिकी स्त्री के अकेलेपन और उसके जीवन की जटिलताओं को दिखाया गया है। 'अग्निसंभवा' में चीनी समाज की निर्धनता और स्त्री श्रम का शोषण सामने आता है। 'एड्स' उपन्यास में पारिवारिक टूटन और विवाहेत्तर संबंधों की विडंबनाएं उजागर होती हैं। 'तालाबंदी', 'छिन्नमस्ता', 'पीली आंधी' और 'स्त्रीपक्ष' जैसे उपन्यासों में मारवाड़ी समाज की परंपराओं और सामाजिक संघर्षों का चित्रण है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व के कारण पारिवारिक विघटन होते हैं। उनके उपन्यास भारतीय और पाश्चात्य समाज के संघर्षों को दर्शाते हैं,प्रभा जी ने स्व-अनुभवों के आधार पर भारतीय एवं पाश्चात्य समाज के तिक्त एवं मधुर सामाजिक सरोकारों पर प्रकाश डाला है। उनके उपन्यासों में भारतीय और पाश्चात्य समाज का साम्य-वैषम्य स्पष्ट रूप से उभरा है। "क्रूर समाज था, क्रूर परिवेश, उनकी क्रूरता जितनी त्रासद थी उतनी ही बेतुकी भी और ऐसे परिवेश में अपना ही कटा हुआ सर अपनी हथेलियों पर लिए मैं घूम रही थी। मुझे कोई शारीरिक सजा नहीं मिली, किसी दैहिक पीड़ा का अहसास कभी नहीं हुआ लेकिन इस चरम मानसिक यंत्रणा को भोगते रहने को, एक स्थाई आतंक को झेलते रहने को मैं बाध्य थी।"1

प्रभा जी के उपन्यासों में राजनीतिक परिवेश प्रामाणिकता के साथ चित्रित है। वे अपनी आत्मकथा में लिखती हैं ,"राजनैतिक अस्थिरता और अनिश्चितता सबके सामने एक ही सवाल- कल क्या होगा ? व्यापारी वर्ग के चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। कैसे चलेंगे यह मिल-कारखाने। हम कैसे रुपया कमाएँ और व्यापार करें ? लोग शहर छोडकर

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January-2025 | Page 33-38

भागने लगे।"2 उनके उपन्यासों में वर्णित राजनीतिक घटनाक्रम, परिस्थितिजन्य अनिवार्यता कहे जा सकते हैं जो कथानकों को गहरी अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। 'अग्निसंभवा' में चीन की राजनीतिक समस्याओं, गोर्वेचेव की कम्युनिस्ट निरंकुशता और प्रजातांत्रिक अलगाववाद को दर्शाया गया है। 'आओ पेपे घर चलें' में दक्षिण अफ्रीका में नस्लभेद और रंगभेद की समस्या का चित्रण है। 'एड्स' में खाड़ी युद्ध और युद्ध के दुष्प्रभावों पर चिंता व्यक्त की गई है। 'स्त्रीपक्ष' में भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण घटनाक्रम जैसे आपातकाल, इंदिरा गांधी की हत्या, नक्सलवादी आंदोलन और उदारीकरण की नीतियों पर चर्चा की गई है। 'पीली आंधी' उपन्यास परतंत्र भारत से लेकर स्वतंत्र भारत तक की लंबी कथा है। जब भारत ब्रिटिश उपनिवेश था, तब राजस्थान शिक्षा, परिवहन, सिंचाई आदि सुविधाओं से अछूता था। आम जनता सामंती अत्याचारों से त्रस्त थीं। राजा-रजवाड़े भी अपनी प्रजा का शोषण कर रहे थे। वणिक परिवार भयभीत होकर बंगाल, बिहार की ओर पलायन करते थे। इन सभी राजनीतिक हलचलों का वर्णन प्रभा जी ने किया है। पीतसराजी के कथन से परतंत्रता का दुख प्रकट होता है "आप ठीक कह रहे हैं, भाई जी। अपने तो दोहरी गुलामी झेल रहे हैं। एक ओर तो ये अंग्रेजी सरकार और दूसरी ओर ये बिगड़े रईस, राजा-रजवाड़ों के बेटे। न इनमें शिक्षा की रूचि, न राज-काज की संस्कृति, सिर्फ शराब पीना और उद्धत भाव से कामुक जीवन बिताना ही इनके जीवन का सार है।"3 प्रभा जी के सभी उपन्यासों में पात्रों, संवादों तथा स्मृतियों के द्वारा राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय स्तर की राजनीतिक घटनाओं तथा संवेदनशील मुद्दों का गंभीरतापूर्वक विवेचन मिलता है।

प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में आर्थिक परिवेश की महत्ता व प्रभाव की ओर संकेत करते हुए स्त्री की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर विशेष बल दिया है। वे मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थीं और एक ऐसे समाज की परिकल्पना करती थीं जहां समाजवाद हो, न कोई गरीब हो, न कोई अमीर। उनके लेखन में शोषित वर्ग के प्रति करूणा और सहानुभूति दिखाई देती है। 'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास में प्रभा को अमेरिका जैसे संपन्न देश में भी श्रम शोषण से गुजरना पड़ता है। भारत की निर्धनता पर अफसोस जताते हुए मिसेज ड्यूपॉन्ट के शब्द "यह लड़की इंडिया से आई है, गरीब देश के गरीब लोग हैं। इन्हें दो वक्त का खाना भी नहीं मिलता.... प्रभा को काम की जरूरत है।"4 विदेशी मुद्रा संकट तथा भारतीय मुद्रा के अवमूल्यन की ओर संकेत करते हुए प्रभा जी ने अर्थ के महत्व को समझाया है। 'अग्निसंभवा' में चीन की आर्थिक स्थिति और हांगकांग में अर्थोपार्जन के उपायों पर प्रकाश डाला गया है, जबकि 'आओ पेपे घर चलें' में अमेरिका में श्रम शोषण का मुद्दा उठाया गया है। 'तालाबंदी' और 'छिन्नमस्ता' में व्यावसायिक

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January-2025 | Page 33-38

जगत की आर्थिक समस्याओं और प्रतिस्पर्धा को चित्रित किया गया है। ‘ पीली आंधी’ उपन्यास में प्राकृतिक प्रकोप के कारण पड़े अकाल से उत्पन्न संकटों जैसे पलायन, महंगाई व निर्धनता का वर्णन मिलता है। राजस्थान के वणिक धनोपार्जन हेतु अपना परिवार, अपनी मातृभूमि को छोड़कर देशावरी जाने के लिए विवश थे। परायी भूमि में अर्थाभाव से जूझते हुए जीवन की नई शुरुआत करना निःसंदेह संघर्षपूर्ण है। प्रभा जी के उपन्यासों में आर्थिक शोषण के प्रति गहरी संवेदनशीलता दिखाई देती है। उन्होंने आर्थिक पक्ष से संबंधित अधिकांश समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है तथा स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया है।

प्रभा जी के उपन्यासों में भारतीय व पाश्चात्य समाज के धार्मिक परिवेश का उल्लेख मिलता है। भारतीय परिवेश में 'अर्थ' के पश्चात् 'धर्म' सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। प्रभा जी भी धर्म के प्रति आस्थावान थीं परंतु धार्मिक कर्मकांडों तथा आडंबरों में उनका विश्वास नहीं था। ‘पीली आंधी’, ‘छिन्नमस्ता’, ‘स्त्री पक्ष', 'अपने अपने चेहरे’ आदि उपन्यासों में मारवाड़ी समाज की धार्मिक मान्यताएँ परिलक्षित होती हैं। 'तालाबंदी' उपन्यास में श्याम बाबू आस्तिक हैं, वे प्रतिदिन ऑफिस जाकर सर्वप्रथम अपने कक्ष में रखी हुई राणी सत्ती व हनुमान के चित्रों को प्रणाम करते हैं तत्पश्चात कार्य आरंभ करते हैं। कार्य में असफल होने पर ईश्वर के प्रति आक्रोश भी व्यक्त करते हैं।

'आओ पेपे घर चलें' की प्रिया यद्यपि अमेरिका में रहती है किंतु सदा ईश्वर को याद करती है, हनुमान जी का लॉकेट पहनती है। स्त्रीपक्ष की वृंदा पति का प्रेम पाने के लिए तांत्रिकों के पास जाती है। बाबा उन्हें गंडे, ताबीज, अंगूठियाँ देते हुए कहते हैं "तुम्हारी जन्मकुंडली में विषयोग है, इसलिए तुम्हें पति-सुख नहीं मिल रहा। अब की शिवरात्रि पर व्रत रखना और शिवजी पर एक भारी सोने का सर्प बनाकर चढ़ा देना तुम्हारा काम हो जाएगा।"5 'छिन्नमस्ता’ उपन्यास में भी धार्मिक अंधविश्वास के प्रसंग मिलते हैं। प्रिया दुःस्वप्नों के निवारण हेतु हनुमान चालीसा पढ़ती है, उसकी बीमारी के समय दाई मां देवी देवताओं से स्वास्थ्य लाभ की मनौती मांगती है। 'अपने-अपने चेहरे' की मिसेस गोयनका ईश्वर भजन, तीर्थयात्रा, ग्रह दशा आदि पर विश्वास रखती हैं। 'पीली आंधी' उपन्यास में धार्मिक परिवेश के अधिक प्रसंग वर्णित हैं। धार्मिक अनुष्ठान, पूजा-पाठ, दान-पुण्य, ब्राह्मण भोज, उपवास आदि क्रियाकलाप मानवीय संस्कार के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। 'आओ पेपे घर चलें', 'एड्स' और 'अग्निसंभवा' उपन्यासों में विदेशी पृष्ठभूमि पर धार्मिक मान्यताओं के दर्शन होते हैं। एड्स' उपन्यास में धर्म संबंधित चर्चा अपेक्षाकृत कम है। राम मंदिर विवाद, ईसाई मुस्लिम धार्मिक विद्वेष की चर्चा इस उपन्यास में मिलती है। 'अग्निसंभवा की आइवी तमाम वैचारिक मतभेद को परे रखकर प्रभा के साथ

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January-2025 | Page 33-38

क्रिसमस का त्यौहार मनाती है। 'आओ पेपे घर चले' उपन्यास की आइलिन प्रभु यीशु पर विश्वास रखती है। क्रिसमस का त्यौहार वह हर्षोल्लास के साथ मनाती है, प्रभा को अपने साथ चर्च ले जाती है। इस प्रकार प्रभा खेतान के सभी उपन्यासों में धर्म का उल्लेख मिलता है। ईश्वर में आस्था रखते हुए उन्होंने कर्म को ही ईश्वर की सच्ची आराधना माना है।

प्रभा जी के उपन्यासों में विदेशी तथा भारतीय सांस्कृतिक परिवेश का चित्रण हुआ है। संस्कृति मानव जीवन मूल्यों को परिमार्जित करती है। संस्कृति व समाज परस्पर अन्तर्संबंधित हैं। प्रभाजी ने भारतीय और विदेशी संस्कृतियों के बीच के भेद को दर्शाया है। 'आओ पेपे घर चलें', 'अग्निसंभवा' तथा 'एड्स' उपन्यासों में क्रमशः अमेरिका, हांगकांग और कोरिया का आधुनिक महानगरीय परिवेश चित्रित है। पाश्चात्य जीवन शैली की आपाधापी के मध्य लोगों के पास सदैव समयाभाव रहता है। स्त्री-पुरुष सुबह से रात तक कार्य में व्यस्त रहते हैं और भौतिकतावाद से ग्रसित हैं। सत्तर वर्षीय आइलिन साज श्रृंगार करती है, तेज गति से गाड़ी चलाती है और अपने विवाह तथा विवाहेत्तर संबंधों को खुलकर स्वीकारती है। प्रो. गोपाल राय ने इस उपन्यास के कथानक और वस्तु विन्यास से प्रभावित होकर लिखा है "विश्व संदर्भ में नारी की नियति को पहचानने और उद्घाटित करने का यह एक उल्लेखनीय सर्जनात्मक प्रयास है। इसके साथ ही यह एक संवेदनशील भारतीय लेखिका की आंखों से देखी हुई अमेरिकी जीवन की तस्वीर भी है।"6 'एड्स' उपन्यास मैं कुक्कू अपनी सुंदरता निखारने के लिए पांच लाख खर्च करने की बात सोचती है। उनके पास दुख-पीड़ा के लिए अनावश्यक समय नहीं है, शराब पीकर और नाच गाकर अपना तनाव कम करने का प्रयास करती है। 'अग्निसंभवा' उपन्यास की आइवी परिश्रमी है और ताजे स्वादिष्ट भोजन को प्राथमिकता देती है। उसे अपने किसी भी कार्य के प्रति अपराधबोध नहीं है। पाश्चात्य सभ्यता में नैतिकता और मर्यादा के बंधन अपेक्षाकृत शिथिल हैं। 'पीली आंधी' उपन्यास में ग्रामीण परिवेश का विस्तृत वर्णन मिलता है। ग्रामीण संस्कृति की सौंधी महक इस उपन्यास की विशिष्टता है। 'तालाबंदी', 'अपने अपने चेहरे, 'स्त्री पक्ष', 'छिन्नमस्ता' उपन्यासों में महानगरीय संस्कृति वर्णित है। इन सभी उपन्यासों में अर्थ-लोलुपता, भ्रष्टाचार, अंतर्द्वन्द्व, मध्यम वर्गीय संघर्ष, विघटित संयुक्त परिवार, अस्मिता का संकट दर्शाया गया है। सभी उपन्यासों में परिवर्तनशील सांस्कृतिक परिवेश का भावात्मक चित्रण किया गया है। प्रभा जी ने पाश्चात्य व भारतीय संस्कृति पर तुलनात्मक दृष्टि डालते हुए परिवेशगत वर्णन की न्याय संगत अभिव्यक्ति दी है , जो समाज के बदलते मूल्यों को समझने में सहायक है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-3 | Issue-1 | January-2025 | Page 33-38

प्रभा खेतान के उपन्यासों में परिवेश का चित्रण अत्यधिक सूक्ष्म और यथार्थवादी है, जिसमें उन्होंने समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, संस्कृति और मानव मूल्य जैसे विविध पहलुओं को अभिव्यक्त किया है। उनके लेखन में सामाजिक परिवेश की सत्यता, महानगरीय जीवन की जटिलताएँ, राजनीतिक घटनाओं का प्रभाव और आर्थिक असमानताओं की स्थिति को स्पष्ट रूप से उकेरा गया है। प्रभा जी ने स्त्री के संघर्षों, पारिवारिक विघटन और वैश्विक समस्याओं के बीच उसकी अस्मिता के प्रश्न को प्रमुखता से उठाया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में भारतीय और पाश्चात्य समाजों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक मतभेदों का विवेचन करते हुए समग्र मानवता के विविध पहलुओं को उजागर किया है। प्रभा जी की परिवेशगत प्रतिबद्धता व सूक्ष्मान्वेषण दृष्टि और जीवन के सहज व्यापार की जीवंतता निःसंदेह प्रशंसनीय है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1.खेतान, प्रभा : अन्या से अनन्या, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 176

2. खेतान प्रभा : अन्या से अनन्या, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010. पृ. 187

3. खेतान, प्रभा : पीली आंधी, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण, 2001, पृ. 16

4. खेतान प्रभा : अन्या से अनन्या, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2010. पृ. 112

5. खेतान, प्रभा : स्त्रीपक्ष, जनसत्ता सबरंग पत्रिका जून 1999, पृ. 21

6. राय, गोपाल : हिन्दी उपन्यास का इतिहास, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, तीसरी आवृत्ति 2013, पृ. 383